प्रवचन

परमहंसश्रीहंसानंदजीसरस्वतीदण्डीस्वामीजी

विषय तालिका

CD # 04 *JUL 2006 *

SN	Title	Min	Coding	Contents	
1	01.07.06 [P]	33		कृष्ण-राधा का स्वरूप वर्णन एवं जल और लहर का दृष्टान्त-संपूर्ण चित्रण	
2	02.07.06 [P]	28		माया से जगत की उत्पत्ति, ब्रह्म ही जगत का निमित्तोपादान कारण है	
3	03.07.06	47		ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या,**प्रेयस सुख** इन्द्रिय विषय संयोग जनित आत्मानंद का आभास मात्र है,**श्रेयससुख** आत्मानंद है	Imp
4	03.07.06[P]	35		**अद्रष्टो द्रष्टा**-जा०स्व०सु० का व्यापक अदृश्य प्रकाशक ही ब्रह्म है,यह ज्ञान गुह्यतम है क्योंकि ब्रह्म इन्द्रियातीत है	**
5	04.07.06	50		गीता २/१६: ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या, हमारा स्वरूप सच्चिदानंद है सारा दृश्य जगत मायाकृत पंचभूत ही है	**
6	04.07.06[P]	33		सृष्टि की उत्पत्ति, ब्रह्म ही जगत का निमित्तोपादान कारण है, कारण से कार्य अभिन्न होता है	*1*
7	05.07.06[P]	32		ब्रह्म ही जगत का निमित्तोपादानकारण है, ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या	*2*
8	06.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
9	07.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
10	08.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
11	09.07.06	56	कक्षासामग्री	स्वभाव सिद्ध स्वरूप का अज्ञान से नाश संभव नहीं, सर्वदेश, सर्वकाल व सर्वरूपों में व्याप्त एक अकेला ब्रह्म ही है	1
12	10.07.06	64	कक्षासामग्री	अज्ञान का स्वरूप निरूपण, अनादि-सादि निद्रा, निद्रा के कार्य जा०-स्वप्न, आवरण और विक्षेप शक्ति की विवेचना	2
13	11.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
14	12.07.06	61	कक्षासामग्री	अर्जुनउवाच :-मैं अपने धर्म को भी नहीं जानता, मेरे दु:खों की निवृत्ति किस प्रकार होगी ?	3
15	13.07.06	55		जैमिनी, गौतम, कपिल, वशिष्ठ, व्यास आदि ऋषियों के सृष्टि के ६ मत, ईश्वर जगत का निमित्तोपादान कारण है	CM
16	14.05.06[P]	31		भगवान का **नि०नि०** स्वरूप, **आत्मा-परमात्मा-अनात्मा** भेद, माया के ३ शरीर एवं उनके अभिमानियों का निरूपण	**
17	14.06.06	52		छा०उ० सनतकुमार-नारद संवाद, ब्रह्म/**भूमा** का स्वरूप निरूपण, जा०स्व०सु० माया है, ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या	Imp
18	15.07.06[S]	53	कक्षासामग्री	जा०स्व०सु०छाया है व द्रष्टा पुरुष है, मैं ही द्रष्टा हूँ और माया से दृश्य भी,मेरा स्वरूप सच्चिदानंद है-तत्त्वमसि	4
19	16.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
20	17.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
21	18.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
22	19.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
23	20.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
24	21.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
25	22.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
26	23.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
27	24.04.06[P]	25		ओंकार/प्रणव/प्रकृति/माया सत-रज-तम ३ गुणों वाली है-जा०स्व०सु०, पंचभूतों के २५ तत्त्वों का संघात शरीर है	Imp
28	25.07.06	48		अर्जुन की दु:ख निवृत्ति व अमृतत्व प्राप्ति की भ० से प्रार्थना, स्वरूप ज्ञान की अपेक्षा, भगवानुवाच : अहंब्रह्मास्मि	Imp
29	26.07.06	00		प्रवचनअनुपलब्ध	NA
30	27.06.06	65	कक्षासामग्री	जगत माया रूपी मेघ की बरसात है, सत् चित् आनंद स्वरूप आत्मा साक्षी और असंग है	Imp
31	28.06.06	80		दृष्टान्त :-रामचरित्र गाथा, लवकुश-जीव-जगत	
32	28.07.06	59	कक्षासामग्री	**चिदाभास की ७ अवस्थाऐं**	Imp
33	29.06.06[P]	30		अ०रा०-प्रथम सर्ग-राम हृदय :- राम का निर्गुण निराकार स्वरूप निरूपण	Cap
34	30.06.06	56		व्यष्टि-समष्टि माया का वर्णन, निद्रा माया है स्व०जा० निद्रा का परिवार है, ऋषि-केवट कन्या, महात्मा का दृष्टान्त	***
35	30.07.06	44		**सामान्य एवं विशेष ज्ञान**, सामान्य ज्ञानअज्ञान का बाधक नही साधक है, विशेष ज्ञान अज्ञान का बाधक है	Imp
36	31.07.06	43		ओंकार का स्वरूप निरूपण	